Generally, it takes about five years for the commissioning of such a project. In the Fifth Plan we are adding 1200 MW of power. This is one of the projects that is going to generate 240 MW.

श्री जगन्नाथ मिश्र : श्रीमन, मेरे प्रश्न का उत्तर तो नहीं मिला लेकिन मैं दूसरा प्रश्न कर रहा हूं।

मन्त्री महोदय अच्छी तरह से जानते हैं कि और चीजों के मद्दे बिहार में बिजली का सर्वथा अभाव है। सरकार ने कटिहार में एक पावर स्टेशन बनाने का विचार किया लेकिन ओवरनाइट डिसीजन बदल गया, उसे पश्चिम बंगाल में ले जाने का निर्णय किया गया।... (व्यवधान)... बिहार के नये बिजली मन्त्री बिहार में बिजली मोहैया करने के लिए कृतसंकल्प हैं तो इस पृष्ठभूमि में मैं जानना चाहता हूं बिहार में बिजली की कमी को दूर करने के लिए और वहां के बिजली मन्त्री को प्रोत्साहन देने के लिए मन्त्री महोदय कौन से तात्कालिक और व्यावहारिक कार्यवाही करने जा रहे हैं, गुजरात के पैटर्न पर ?

DR. K. L. RAO : This question pertains to Gujarat. But the question that the hon. Member has asked is about Bihar and North Bengal are found to be backward in power. Therefore, we want to set up a station to supply power to both the areas. We are going to locate a power station on the boundary of two States. If we can manage, we can even have half in one State and half in the other State, if it is feasible. We never said that the power station will be located at Katihar. What we are trying to do is to have it as a Central project to serve both the areas.

SHRI K. S. CHAVDA : There has been acute shortage of power in Gujarat, whether hydel or thermal or atomic. May I know what steps Government propose to take to commission this plant as early as possible so that there can be some relief so far as power shortage in Gujarat is Concened ?

DR. K. L. RAO : I have already submitted that no power project can be commissioned earlier than five years. Whatever we may do, it may be 4½ years or 5 years. Under Indian conditions it will take five years. The only way to meet the shortage in the country is to take up as many projects as possible, and that is what we are trying to do also in Gujarat.

श्री बेकारिया : यह जो थर्मल पावर स्टेशन बन रहा है, कभी-कभी साल में कम से कम तीन महीने कोयले की तंगी के कारण कई थर्मल पावर स्टेशन बन्द रहते हैं, तो मैं पूछना चाहता हूं कि थर्मल पावर स्टेशन की बजह से जो कुछ पावर पैदा होगी उसकी उसमें कभी-कभी तंगी आ ही जायेगी इसलिए जो एटामिक पावर स्टेशन गुजरात में बनाने का निश्चय किया गया है उसमें जल्दी क्यों नहीं की जाती है ?

DR. K. L. RAO : Atomic fuel is rarer than coal in the country. Atomic power rods are more difficult to procure. So we have got to go in for coal in view of the abundance of coal in the country. The planning of coal supplies is being done in such a way that we hope to meet the necessary requirements in all the States.

SHRI D. D. DESAI : There has been power shortages in Gujarat since the last 20 years, and that continues even today. The deliveries of equipment are known to be rather delayed all over country. May I know what steps Government propose to take in this regard in respect of this and other power stations in the country ?

DR. K. L. RAO : It is true that the indigenous equipment is taking a longer time than what we have targeted for. We are looking into this question. Of course, our policy is to manufacture as much equipment as possible in the country. If, however, it is found that we will not be able to meet our requirements from indigenous sources, then, I think, we will have to go in for some imports.

रेलगाड़ियों के भोजन यानों में यात्रियों को बढ़िया किस्म का भोजन दिया जाना

*27. श्री शिव कुमार शास्त्री :
श्री सतपाल कपूर :

क्या रेल मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि

(क) क्या रेलगाड़ियों के भोजन यानों में मिलने वाला भोजन घटिया किस्म का होता है;

(ख) क्या शाकाहारी भोजन व्यवस्था पर कोई उचित ध्यान नहीं दिया जाता;

(ग) क्या भोजन यानों में प्रयोग किया जाने वाला गेहूं का आटा घटिया किस्म का होता है और चपातियां बनाने की कोई उचित व्यवस्था नहीं है; और

(घ) यदि हां, तो जलपान व्यवस्था में सुधार करने के लिए सरकार क्या कार्यवाही कर रही है ?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF RAILWAY (SHRI MOHD. SHAFI QURESHI) : (a) to (c). there have been some complaints about inferior quality of food including chapaties being served in railway dining cars. No complaints have been received regarding inferior quality of wheat flour. Proper attantion is paid towards arrangements for serving all types of food.

(d) A statement is laid on the Table of the Sabha.

Statement

(d) Some of the important steps taken to improve the quality of catering on Railways (including dining cars) are as under :—

(i) Regular inspections by Officers and Inspectors of the standard of food supplied and service rendered by the catering establishments managed departmentally as well as by contractors.

(ii) Thorough investigation into all complaints about catering with a view to rectifying shortcoming as well as penalising erring contractors or departmental catering staff.

(iii) Purchase and supply of raw materials of good quality for departmental catering units is ensured and detailed instructions have been issued laying down the proportion of various ingredients to be used.

(iv) Proper arrangements have been made for the training of staff employed in departmental catering establishments.

(v) Strict supervision is exercised over the working of contractors by deputing Railway staff to educate them and also, if necessary, to supervise their working.

Lapses in individual cases either in quality of food or in service detected in the course of inspections or brought to notice through complaints from the public are promtly attended to and remedial action taken promptly.

श्री शिव कुमार शास्त्री : अध्यक्ष महोदय, अभी माननीय मन्त्री जी ने कहा है कि भोजन के सम्बन्ध मे कुछ शिकायतें मिली है। यह शिकायत-योग्य भोजन तो सदा से रहा है और अब भी है। असल बात यह है कि सफर मे भोजन रुचि से नही किया जाता बल्कि जीने लिए अन्दर डाला जाता है। जो विवरण सभा पटल पर रखा गया है उसके आधार पर मैं कुछ बातें मन्त्री जी से पूछता हूं जिसका साफ साफ वे उत्तर दें।

पहली बात तो यह है कि आपने कहा है कि पके हुए भोजन का निरीक्षण किया जाता है तो उस निरीक्षण का प्रकार क्या है ? क्या निरीक्षण करने वाले किचन मे पतीले से निकाल करके खाना जाचते है या मेज पर लगा लगाया खाना मिल जाता है ?

अगर लगा लगाया आता है मेज पर तो वह तो ठीक नहीं है।

इस के साथ साथ शाकाहारी भोजन की जांच के लिए शाकाहारी व्यक्ति नियुक्त हैं या नोनवैजीटेरियन नियुक्त हैं ? जाहिर है कि अगर वैजीटेरियन फूड की जांच के लिए नौन वैजीटेरियन नियुक्त किये है तो वह उसकी जांच नहीं कर सकते हैं क्योंकि उन्हें तो मीट आदि का ही टेस्ट होता है इसलिए वह भिण्डी के बारे

में क्या बतला सकते हैं कि वह ठीक से पकी है, तली ठीक से है अथवा नहीं। इसलिए यह आवश्यक है कि शाकाहारी भोजन की जांच के लिए शाकाहारी व्यक्ति ही नियुक्त होना चाहिए दूसरा नहीं।

क्या निरीक्षण करने के लिए एक ही व्यक्ति नियुक्त है जोकि हर प्रकार के भोजन की जांच करता है और तारीख भी निश्चित है जिस दिन कि वह भोजन की जांच करता है। जब तक भोजन की जांच सम्बन्धी मौजुदा प्रक्रिया में सुधार नहीं होगा तब तक इस जलपान व्यवस्था में जो दोष व त्रुटियां है वे दूर नही होगीं।

श्री मुहम्मद शफी कुरेशी : रेलवेज़ की हमेशा यह कोशिश रही है कि यात्रियों को सफर के दौरान में अच्छा खाना मिले और इस अच्छे खाने में वैजीटेरियन और नौन वैजीटेरियन फुड दोनों ही शामिल है।

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्य का सवाल है कि उन की पसन्द का खाना नही है।

श्री मुहम्मद शफी कुरेशी : मैं अर्ज करना चाहूंगा कि हम कोशिश करते हैं कि यात्रियों को ज़बान का मज़ा भी मिले पेट भर खाना भी मिले। जहा तक वेजीटेरियन और नौन वेजीटेरियन खाने के टेस्ट करने का ताल्लुक है उस के लिए अलहदा अफसर मुकर्रर किये गये है। इस के अलावा हमारे मैडिकल आफिसर्स और सिनैटरी इंस्पेक्टर्स हैं जोकि खाने की हाइजैनिक बेसिस पर जांच पड़ताल करते हैं। यह बात सही नहीं है कि वैजीटेरियन खाने के लिए नौन वैजीटेयिन व्यक्ति नियुक्त किये जाते हैं।

श्री शिव कुमार शास्त्री: मैंने जो बात पूछी है वह नहीं बताई गई कि आखिर वह जांच करने का तरीका क्या है। क्या वह जो मेज़ पर लगा लगाया थाल आता है उसकी जांच की जाती है या किचन में जाकर जांच करते हैं इस को मंत्री महोदय ज़रा बतला दें।

श्री मुहम्मद शफी कुरेशी : जो खाने की पड़ताल की जाती है वह किचन में जाकर की जाती है।

अध्यक्ष महोदय : रास्ते में बदल तो नहीं दिया जाता है।

श्री शिव कुमार शास्त्री : दूसरे मंत्री महोदय ने अपने विवरण में . . .

अध्यक्ष महोदय: मालूम पड़ता है अभी माननीय सदस्य को तसल्ली नही हुई है।

श्री शिव कुमार शास्त्री : मंत्री महोदय ने अपने विवरण मे लिखा है कि विभागीय खान-पान यूनिटों के लिए जो कच्चे माल की खरीद की जाती है उस की जांच पड़ताल की जाती है लेकिन हकीकत यह है कि भोजन यानों में प्रयोग किया जाने वाला गेहूं का आटा घटिया किस्म का होता है, पीले गेहूं का होता है और लगता यह है कि उस की देखभाल करके और उसे साफ करके पीसा नहीं जाता है। लोग कहते है कि रेलवे केटरिंग में चावल बढ़िया होता है। वैसे मैं चावल नही खाता लेकिन जब औरों को चावल के बारे मे सिफारिश करते सुन कर चावल खाया है तो यह ठीक है कि चावल रोटी के मुकाबले में वहां अच्छा सप्लाई किया जाता है।

दूसरे विवरण में यह लिखा है कि रोटी पकाने की ट्रेनिंग दी जाती है तो रोटी सेंकने की तो ट्रेनिंग दी नहीं जाती है क्योंकि रोटी तो तवे पर जाती है तो क्या कोई ऐसी व्यवस्था करेंगें कि जिससे रोटी नीचे भी रख कर सेंकी जा सके ?

श्री मुहम्मद शफी कुरेशी : चावल और रोटी दोनो को पूरी तरह से पकाया जाता है साथ ही यात्रियो के स्वास्थ्य का भी खयाल रक्खा जाता है।

श्री सतपाल कपूर: हिन्दुस्तान में जितनी भी रेलवे केटरिंग चलती है वह कितने स्टेशनों

और कितनी रेलगाड़ियों पर आप की प्राइवेट केटरिंग चलती है और कितनी जगह पर रेलवे बोर्ड की तरफ से इंतजाम है ?

अध्यक्ष महोदय : अगर मैंगन में मंत्री जी जवाब दें।

श्री मुहम्मद शफी कुरैशी : इंडियन रेलवेज की केटरिंग का जो इंतजाम है वह ठेकेदारों के जरिए और डिपार्टमेंट के जरिए किया जाता है। 2900 स्टेशनों पर और 50 रेलगाड़ियों पर केटरिंग की सहूलियत दी गई है जिसमें से 2800 स्टेशनों और 24 ट्रेनों पर वह केटरिंग ठेकेदारों के जरिए होता है और बाकी 100 स्टेशनों और 26 रेलगाड़ियों पर डिपार्टमेंट के जरिए केटरिंग होती है।

श्री राम सिंह भाई : क्या मंत्री जी को यह ज्ञात है कि जो रोटियां मिलती हैं वह खींचने से बढ़ती हैं और रबड़ जैसे चबाने से नहीं चबना है वैसे ही उनका भी हाल है तो वह रोटियां आटे की होती हैं या वह किसी और अन्य पदार्थ की होती हैं ?

श्री मुहम्मद शफी कुरैशी : आजकल रेलवेज में जो नया इंतजाम किया है उस में हम चपातियां प्लास्टिक के बैग में रखते हैं। मुमकिन है माननीय सदस्य ने गलती से प्लास्टिक के बैग का इस्तेमाल कर लिया हो और वह चबा लिया हो।

श्री ओंकार लाल बेरवा : दक्षिण में हमारे जैसे लोगों के द्वारा चपातियों के लिए आर्डर देते हुए भी रेलवे कंटीन से चपातियां नहीं मिलती हैं और वह इमली का पानी और चावल ही लेकर चले आते हैं तो क्या मंत्री महोदय इस के लिए हिदायत जारी करेंगे कि जब नार्थ वाले साउथ की तरफ जायें तो उन्हें रोटियां भी खाने से दी जाय ?

श्री मुहम्मद शफी कुरैशी : रेलवेज सूबाई हदबंदी से बालातर होकर हर जगह पर हर खाने का इंतजाम करती है और इसलिए जनूबी हिन्दुस्तान में चाहने पर चपातियां भी मिलती हैं। बाकी माननीय सदस्य को अगर किसी खास जगह के बारे में शिकायत हो तो उसे वह हम तक पहुंचायें और हम उस की जांच करेंगे।

SHRI ANNASAHEB GOTKHINDE: It is heartening to note that our new Railway Minister has tried to personally know the inconveniences suffered by the travelling public in the third class in Bombay. May I know whether he is thinking in terms of personally tasting the food served by the Railways?

MR. SPEAKER: The Minister is not here.

SHRI ANNASAHEB GOTKHINDE: He is here, Sir.

THE MINISTER OF RAILWAYS (SHRI T. A. PAI): However much I may travel, as a Minister I am bound to get better food than millions of passengers. I do not want to put myself to that test, but I know only one thing, that this is an area, particularly of catering, where the quality of the food served requires to be continuously looked into. Even if the quality is good one day, it is possible that deterioration might set in later on, and high standards have got to be maintained continuously because on the purity of food perhaps the hygienic condition and the health of the travellers also depend, and I assure the House that all the complaints will be seriously taken up for consideration. Since a large part of the catering also is done by the contractors and by the Department, the same standards will be applied to both. I would also seek the support of the State Governments to see that the quality of the food provided both by the Railways as well as by the contractors is subject to the same rules and regulations and tested continuously. So far as my travelling is concerned, I did not travel to find out the inconvenience. I wanted to find out what exactly the problems of the Railways were...

SHRI JYOTIRMOY BOSU: How was your food in the air-conditioned coach, Mr. Pai?

SHRI T.A. PAI : I can tell you that the food in the air-conditioned coach was quite good.

श्रीमती सहोदराबाई राय : अध्यक्ष महोदय, रेलवेज कैटरिंग में जो खाना बनाते हैं उन में मद्रासी ज्यादा रहते हैं इसलिए मैं कहना चाहूंगी कि 40-50 साल की जो महिलाएं हैं वह इस रेलवेज कैटरिंग में रखनी चाहिए क्योंकि उनको खाने पकाने का अच्छा ज्ञान व अनुभव होता है और उनके वहां पर रहने से हम को अच्छा खाना मिल सकेगा ? पुरुषों को तो खाना बनाना हमारे जैसा अच्छा आता नहीं है ।

भारतीय संविधान के हिन्दी संस्करण की प्रतियों का उपलब्ध न होना

*28. **श्री ओंकार लाल बेरवा :**
श्री हरी सिंह :

क्या विधि और न्याय मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) संविधान का हिन्दी संस्करण पिछली बार कब प्रकाशित किया गया था और उसकी प्रतियां बाजार में कब से उपलब्ध नहीं है और वे लोगों को कब तक पुनः उपलब्ध कराई जायेंगी;

(ख) क्या संविधान का जेबी संस्करण भी प्रकाशित किया जायेगा; और

(ग) भारत का संविधान अधिक से अधिक जन साधारण तक पहुंचाने के लिए क्या उसका रियायती मूल्य भी रखा जायेगा और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण है ?

विधि और न्याय मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री नीतिराज सिंह चौधरी) : (क) संविधान का 1 दिसम्बर, 1957 तक यथा संशोधित द्विभाषी संस्करण विधि मंत्रालय द्वारा 1959 में प्रकाशित किया गया था, जिस में अंग्रेजी पाठ और उसका हिन्दी रूपान्तर आमने-सामने दिए गए हैं । बताया जाता है कि इस प्रकाशन की प्रतियां अभी भी प्रबन्धक, भारत सरकार प्रकाशन, नई दिल्ली के पास विक्रयार्थ उपलब्ध हैं ।

(ख) फिलहाल नहीं । जब नया संस्करण प्रकाशित किया जाएगा तभी इसके जेबी संस्करण के प्रकाशन पर भी विचार किया जाएगा ।

(ग) संविधान के अद्यतन हिन्दी रूपान्तर की प्रति की विक्रय कीमत नियत करने के प्रश्न पर तभी विचार किया जाएगा जब ऐसा रूपांतर प्रकाशन के लिए तैयार हो जाएगा ।

श्री ओंकार लाल बेरवा : सन् 1957 में संविधान की प्रतियां हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में बनीं । मैं जानना चाहता हूं कि वह किस-किस जगह पर बिक्री के लिए रखी गई । कितनी बिक्री हुई और अब कितनी उपलब्ध हैं । छोटे संस्करण पर आपने कब से विचार करना शुरू किया था और उस का क्या निष्कर्ष निकला ?

श्री नीतिराज सिंह चौधरी : कितनी प्रतियां छपी थी, वह कहां है और कितनी बाकी है यह सूचना इकट्ठी कर के मैं माननीय सदस्य के पास भेज दूंगा । छोटे संस्करण के लिए कम्पोजीशन में छोटे अक्षर फोटो-स्टेट किये जाते हैं । जैसा मैंने पहले उत्तर में कहा, जब नया संस्करण तैयार होगा । तब इस पर विचार किया जायेगा :

श्री ओंकार लाल बेरवा : आपने कब से विचार करना शुरू किया था और उसका क्या निष्कर्ष निकला है ?

श्री नीतिराज सिंह चौधरी : छोटे संस्करण की बात नहीं आई ।

श्री ओंकार लाल बेरवा : क्या आप ने दूसरी भारतीय भाषाओं में भी इसके संस्करण निकालने की कोई बात सोची है ? अगर सोची है तो उसका क्या निष्कर्ष निकला है और उस को आप कब तक निकालने जा रहे हैं ?